संस्कृत-भाग

यहां पर आपको शब्द- शब्द का तोड़-तोड़कर हर लाइन का अलग-अलग हिंदी अनुवाद दिया जा रहा है। महत्वपूर्ण गद्यांश/पद्यांश पृथक से एक साथ दिए जा रहे हैं। प्रत्येक पाठ के सभी श्लोक तिरछे वर्णों में छपे हैं ।

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक के **संस्कृत-भाग** के **'संस्कृतभाषायाःमहत्त्वम्'** नामक पाठ से उद्धृत है।

www.gyansindhuclasses.com

- **धन्योऽयम् भारतदेशः यत्र समुल्लसति जनमानसपावनी,**
  धन्य है यह भारत देश, जहां जनमानस को पवित्र करने वाली,
- **भव्यभावोद्भाविनी, शब्द-सन्दोह-प्रसविनी सुरभारती।**
  भव्य भावों को उत्पन्न करने वाली, शब्द समूह को जन्म देने वाली देववाणी, सुशोभित हो रही है,
- **विद्यमानेषु निखिलेष्वपि वाङ्ममयेषु**
  सभी वर्तमान साहित्यों में
- **अस्याः वाङ्मयम् सर्वश्रेष्ठं सुसम्पन्नं च वर्तते ।**
  इसका साहित्य सर्वश्रेष्ठ और सुसम्पन्न है ।
- **इयमेव भाषा संस्कृतनाम्नापि लोके प्रथिता अस्ति ।**
  यही भाषा आज संस्कृत नाम से भी संसार में प्रसिद्ध है ।
- **अस्माकं रामायण महाभारताद्यैतिहासिकग्रन्थाः,**
  हमारे रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक ग्रन्थ,
- **चत्वारोवेदाः, सर्वा उपनिषदः, अष्टादशपुराणानि,**
  चारों वेद, सभी उपनिषद् अठारह पुराण
- **अन्यानि च महाकाव्य-नाट्यादीनि अस्यामेव भाषायां लिखितानि सन्ति।**
  और अन्य महाकाव्य ,नाटक आदि इसी भाषा में लिखे गए हैं।
- **इयमेव भाषा सर्वासामार्यभाषाणां जननीति मन्यते भाषातत्त्वविद्भिः।**
  यही भाषा सभी आर्यभाषाओं की जननी भाषा-वैज्ञानिकों द्वारा मानी जाती है।
- **संस्कृतस्य गौरवं बहुविधज्ञानाश्रयत्वं**
  संस्कृत का गौरव, अनेक प्रकार के ज्ञान का आश्रय होना
- **व्यापकत्वं च न कस्यापि दृष्टेरविषयः।**
  और व्यापकता किसी भी दृष्टि का विषय नहीं है।
- **संस्कृतस्य गौरवमेव दृष्टिपथमानीय सम्यगुक्तमाचार्यप्रवरेण दण्डिना-**
  संस्कृत के गौरव को दृष्टि में रखकर आचार्य प्रवर दण्डी ने कहा है-
- **"संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः।"**
  संस्कृत को महर्षियों ने देववाणी कहा है ।
- **संस्कृतस्य साहित्यं सरसं, व्याकरणञ्च सुनिश्चितम् ।**
  संस्कृत का साहित्य सरस और व्याकरण सुनिश्चित है ।
- **तस्य गद्ये पद्ये च लालित्यं, भावबोधसामर्थ्यम्,**
  उसके गद्य और पद्य में लालित्य (सौन्दर्य) भावों का बोध कराने की क्षमता
- **अद्वितीयं श्रुतिमाधुर्यञ्च वर्तते ।**
  और अद्वितीय श्रुति मधुरता विद्यमान है।
- **किं बहुना चरित्रनिर्माणार्थं यादृशी सत्प्रेरणा संस्कृतवाङ्मयं ददाति**
  अधिक क्या चरित्र निर्माण के लिए जैसी उत्तम प्रेरणा संस्कृत साहित्य

www.gyansindhuclasses.com

देता है,

- **न तादृशीम् किञ्चिदन्यत्।**
  वैसी अन्य कोई नहीं।
- **मूलभूतानां मानवीयगुणानां यादृशी विवेचना**
  मूलभूत मानवीय गुणों की जैसी विवेचना
- **संस्कृतसाहित्ये वर्तते नान्यत्र तादृशी ।**
  संस्कृत साहित्य में मिलती है, वैसी अन्यत्र नहीं ।
- **दया, दानं, शौचम्, औदार्यम्, अनसूया, क्षमा ,**
  दया, दान, पवित्रता, उदारता, किसी से ईर्ष्या न करना, क्षमा
- **अन्ये चानेके गुणाः अस्य साहित्यस्य अनुशीलनेन सञ्जायन्ते ।**
  और अन्य अनेक गुण इस साहित्य के अध्ययन से उत्पन्न होते हैं ।
- **संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः, महर्षिव्यासः,**
  संस्कृत साहित्य के आदि कवि वाल्मीकि, महर्षि वेदव्यास,
- **कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भास-भारवि भवभूत्यादयो**
  कविकुल गुरु कालिदास और अन्य भास, भारवि, भवभूति आदि
- **महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नैः अद्यापि पाठकानां हृदि विराजन्ते।**
  महाकवि अपने रचित ग्रन्थ रनों के द्वारा आज भी पाठकों के हृदय में विराजमान हैं ।
- **इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च,**
  यह भाषा हमारी माता के समान सम्माननीया और पूजनीया है,
- **यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं, गौरवम्,**
  क्योंकि भारत माता की स्वतन्त्रता, गौरव,
- **अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वञ्च संस्कृतेनैव सुरक्षितुं शक्यन्ते।**
  अखण्डता एवं सांस्कृतिक एकता को संस्कृत के द्वारा ही सुरक्षित किया जा सकता है।
- **इयं संस्कृतभाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति।**
  यह संस्कृत भाषा सभी भाषाओं में प्राचीनतम और श्रेष्ठ है।
- **ततः सुष्ठूक्तम्-**
  इसलिए ठीक ही कहा गया है-
- **'भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती' इति।**
  भाषाओं में देववाणी संस्कृत मुख्य, मधुर और अलौकिक है।

www.gyansindhuclasses.com

www.gyansindhuclasses.com